महादेवी के काव्य में विरह वेदना

Babita*

M.A. (Hindi) NET JRF, Hisar

शोध सार:- महादेवी वर्मा हिन्दी की प्रतिभावान कवयित्रियों में से एक हैं जिनकी गणना छायावाद के चार प्रमुख स्तम्भों में की जाती है। अनुभूतियां जब तीव्र होकर कवि हृदय से उच्छलित होती हैं तो उन्हें कविता के रूप में संजोया जाता है। महादेवी वर्मा ने मन की इन्हीं अनुभूतियों को अपने काव्य में मर्मस्पर्शी, गंभीर तथा तीव्र संवेदनात्मक अभिव्यक्ति प्रदान की है। महादेवी जी ने अपना काव्य वेदना और करुणा की कलम से लिखा उन्होंने अपने काव्य में विरह वेदना को इतनी सघन्नता से प्रस्तुत किया कि शेष अनुभूतियां भी उनकी पीड़ा के रंगों में रंगी हुई जान पड़ती है। महादेवी का विरह उनके समस्त काव्य में विद्यमान है। वे वेदना से प्रारंभ करके वेदना में ही अपनी परिणति खोज दिखाई देती है। महादेवी जी की वेदानुभूति संकल्पात्मक अनुभूति की सहज अभिव्यक्ति है। उनकी काव्य की पीड़ा को मीरा की काव्य पीड़ा से बढ़कर माना गया है। महादेवी के काव्य का प्राण तत्व उनकी वेदना और पीड़ा रहे। वे संवय लिखती हैं, दुःख मेरे निकट जीवन का ऐसा काव्य है जो सारे संसार को एक सूत्र में बांधने की क्षमता रखता है।¹ महादेवी की विरह वेदना में परम तत्व की अभिव्यक्ति दिखाई देती है। उनके काव्य का मुख्य प्रतिपाद्य प्रिय से बिछुडना और उसे खोजने की आतुरता है। महादेवी जी ने अपने काव्य में आत्मा और परमात्मा के वियोग को विरहानुभूति के रूप में प्रस्तुत किया है।

मुख्य शब्द:- आध्यात्मिकता, बिछोह, सात्विकता, परिष्कृत, स्निग्धता, भावोद्भक्त

-----X-----

विरह का अर्थ है, वियोग और वेदना का अर्थ है, मानसिक या मन की पीड़ा। इस प्रकार विरह वेदना का अर्थ हुआ वियोग से उत्पन्न मन की पीड़ा। हिन्दी काव्य में विरह भावना को अभिव्यक्त करने वाली कवयित्रियों में महादेवी जी का प्रमुख स्थान है। महादेवी के अपने काव्य में आत्मा और परमात्मा के बिछोह को विरह वेदना के रूप में अभिव्यक्त किया है। विरह के ताप को सहकर भी वे उससे उबरना नहीं चाहती है। वे नहीं चाहती कि उनकी पीड़ा कभी समाप्त हो, उनकी पीड़ा को कोई करुणा, सहानुभूति या सुख से भर दे। सम्पूर्ण साहित्य में उनकी पीड़ा की समानता करने वाला कोई नहीं है। उन्हें पीड़ा की रानी कहा जाता है। नंद दुलारे वाजपेयी ने महादेवी की वेदना के बारे में लिखा कि “प्रसाद के आंसू, निराला की स्मृति जैसी उद्वात और एक तान कल्पना तथा पल्लव का सा सौन्दर्योन्मेष महादेवी जी में नहीं है किन्तु वेदना का विन्यास, उसकी वस्तुमत्ता (आब्जेक्टिविटी) का बहुरूप और विवरणपूर्ण चित्रण जितना महादेवी जी ने दिया है, उतना वे तीनों कवि नहीं दे सके हैं।”²

महादेवी के काव्य में भावोद्भक्त की नैसर्गिकता के कारण वेदना भाव अकृत्रिम रूप में अभिव्यक्त किया हुआ है। उनका विरह

बाह्य आडम्बरों से मुक्त है। इसमें छल कपट, बड़बोलापन और हाहाकार नहीं है।

महादेवी की विरह वेदना में निश्चलता और सात्विकता के दर्शन होते हैं। विरह रूपी संगीत महादेवी की आत्मा को इंकृत करता है तथा वेदना इनके जीवन के प्रकाशमान करती है। विरह की सात्विकता महादेवी की कविताओं में विश्व वेदना बन जाती है। उनके प्रथम काव्य संग्रह ‘नीहार’ के एक गीत में विरह जन्य व्याकुलता के साथ संयोग की इच्छा भी छिपी हुई है।

“जो तुम आ जाते एक बार

कितनी करुणा कितने संदेश पथ में बिछ जाते बन पराग,

गाता प्राणो का तार-तार अनुराग भरा उन्माद राग,

छा जाता जीवन में बसन्त लुट जाता चिर संचित विराग,

आंखे देती सर्वस्ववार।”³

उनकी पीड़ा हृदय की शांत और गंभीर पीड़ा थी। चिर विरह की भावना के कारण महादेवी की कविताओं में उनके हृदय की

करुणा दिखाई देती है। करुणा से भरी होने के कारण महादेवी की वेदना भी परिष्कृत रूप में अभिव्यक्त हुई है। महादेवी जी ने अपने काव्य में एक तरफ तो भारतीय नारी के असंतोष, निराशा और अकांक्षा स्वर मुखरित हुई है। उनकी कविताओं “मैं नीर भरी दुख की बदली विरह वेदना का नाम ले, मैं विरह में चिरलीन हूँ, मैं अपने सूनूपन की रानी हूँ मतवाली, तुमको पीड़ा में ढूँढा आदि में उन्होंने वेदना, करुणा, विरह तथा दुख को अभिव्यक्त किया है। कवयित्री ने सदैव परमार्थ व परहित को महत्व दिया। वे दूसरे के दुखों में स्वयं दुखी हो उठती है। वे सदैव मानव कल्याण की कामना करती हुई दिखाई देती है। महादेवी जी को करुणा की कवयित्री कहा जाता है। अपने करुणा और विरह वेदना सम्बन्धी दृष्टिकोण को लेकर उन्होंने अपने काव्य संकलन में स्वयं से ही प्रश्न किया है, “सुख दुख के धूप छाही डोरे से बने हुए जीवन में मुझे केवल दुख ही क्यों इतना प्रिय है”

महादेवी जी को विरहानूभूति में आध्यात्मिकता का भाव विद्यमान है। जीवन भर विवाद के गीत गाने वाली महादेवी कल्पना करती है कि इस जीवन के संध्याकाल के समय लम्बी यात्रा करने के बाद जब जीवन अपने ही भार से दब जाएगा और कातर क्रंदन करने लगेगा तब विश्व के सभी कोनो से एक अज्ञात सुख की वर्षा होगी। उनकी यही कल्पना और कामना उनकी वेदना को आध्यात्मिकता से जोड़ती है। वे अपनी आध्यात्मिकता को इस लोक जीवन से जोड़े रखना चाहती है। मैं फूलों में रोती वे बालकण में मुस्काते, मैं पथ में बिछ जाती वे सौरभ में उठ जाते, जैसी पंक्तियों में उनकी लौकिक तथा अलौकिक वेदना का चित्रण हुआ है।

महादेवी वर्मा ने अपने व्यक्तिगत सुख दुःख को समष्टि में लीन करने का प्रयास किया है। उनमें गीतों में व्यक्तिगत सुख-दुःख, वेदना और आशा-निराशा, समष्टि के सुख-दुःख, वेदना और आशा-निराशा बन कर सामने आते हैं। ऐसा लगता है मानो वे अपने दुःख का समाजीकरण कर रही हो।

“सब बुझे दीपक जला लूं।

घिर रहा तम आज, दीपक रागिनी अपनी जला लूं।”

महादेवी के गीतों में विरह की सात्विकता पाई जाती है। उनकी वेदना का आधार नारी का कोमल हृदय है। उनकी यही सात्विकता उनकी कविताओं में भावुकता, स्निग्धता, भावोद्देरकयुक्त प्रतीक्षा और लोक मंगल की भावना के साथ दिखाई देती है।

“उन्होंने हरिऔध की राधा की भांति अत्यन्त सहजता से वैयक्तिक पीड़ा को विश्व पीड़ा में लीन कर दिया। समाज के दलित, उपेक्षित वर्ग के प्रति उनकी करुणा और सेवा-भावना उनके वेदना का दूसरा पहलू प्रस्तुत करती है।”⁴

महादेवी के काव्य में जो विरह वेदना हमें देखने को मिलती है। वह उनकी अश्रुधारा बनकर सीधे पाठक के हृदय को प्रभावित करती है। वे एक जगह स्वयं को “मैं नीर भरी दुख की बदली” कहती है। महादेवी जी के काव्य में जो विरह दिखाई देता है, वह अपने प्रियतम से मिलने की आतुरता के कारण है। “नीहार” महादेवी के किषोर जीवन की वह रचना है, जिसमें उसका मन प्रणय और पीड़ा के वषीभूत हो रहा था। कवयित्री का मन एक ऐसा अनोखा संसार बसाना चाहता है जहां वेदना की मधुर धारा बह रही हो।

“चाहता है यह पागल प्यार।

अनोखा एक नया संसार।।

कलियों के उच्छ्वास शून्य में ताने एक वितान

तुहिन कर्णों पर मृदु कम्पन से सेज बिछादे गान।।”⁵

महादेवी की रचनाओं में विरह और वेदना की प्रबलता के कारण ‘एकान्त’ का भाव भी देखा जा सकता है। “अपने इस सूनूपन की मैं हूँ रानी मतवाली, प्राणों का दीपक जलाकर, करती रहती दीवाली।” कवयित्री अपने प्रियतम को पाने के लिए बार-बार प्रयत्न करती और विफलता का अनुभव करती है। अपने प्रियतम को पाने के लिए उसके प्राणों में एक आकांक्षा मचल उठती है तथा उसकी व्याकुलता बढ़ जाती है।

“अली कैसे उनको पाऊं?

वे आंसू बन कर मेरे

इस कारण ढुल-ढुल जाते

इन पलकों के बंधन में

मैं बांध- बांध पछताऊं।”⁶

महादेवी के काव्य में दुःखवाद को प्रमुखता से स्थान दिया गया है। कुछ लोगों ने उनकी पीड़ा को “अरोपित” पीड़ा कहा है। लेकिन उनकी कविताओं को देखकर उनकी पीड़ा सहन प्रतीत होती है। वे अपने दुःख को प्रकट करते हुए कहती हैं

“विरह का जलजात जीवन, विरह का जलजात।

वेदना में जन्म करुणा में किया आवास

अश्रु चूमता दिवस इसका अश्रु गिनती रात।

आंसूओ का कोष उर, दृग अश्रु की टकसाल,

तरल जब कण से बने घन सा क्षणिक मृदुगात।”7

महादेवी के काव्य में एक ओर विरह वेदना है तो दूसरी ओर आशामय जीवन है। वे दुःख में भी सुख को देखती है तथा अपने प्रिय का स्मरण करते हुए खिल उठती है।

“नैनो में आंसू है,

और हृदय में सिहरन है,

पुलक-पुलक उर सिहर-सिहर तन,

आज नयन आते क्यों भर-भर।”8

इस आनन्द का कारण यह है कि कवयित्री अपने प्रिय के प्रेम से भरी हुई है। अपने प्रिय तक संदेश पहुंचाने के लिए कवयित्री छटपटाने लगती है।

“कैसे संदेश प्रिय पहुंचाती?

दृग जल की सिल मसि है अक्षय,

मसि प्याली झरते तारक दृय।”9

महादेवी के काव्य में मिलने वाले दुःखवाद को देखते हुए कुछ विद्वान मानते हैं कि उनके काव्य में क्रन्दन और रुदन के दर्शन होते हैं।

“महादेवी के गीतों में क्रन्दन और रुदन का रूप देखा जाता है, उसके पीछे भी समाज का बंधन छिपा हुआ है। जीवन के सुख एवं स्वप्नों के टूट जाने के कारण दुख एवं रुदन के प्रति इतना लगाव देखा जाता है।”10

विरह की लम्बी साधना के बाद प्रिय का साक्षात्कार सृष्टि में व्याप्त करुणा में ही होता है। कवयित्री को विरह वेदना से मिलने का सुख प्राप्त हुआ है। वेदना के पश्चात अंत में उसकी परिणति आनंद में होती है।

महादेवी की सांध्यगीत रचना में चिंतन प्रधान अनुभूतियां विद्यमान हैं जो कवयित्री की मानसिक स्थिति को व्यक्त करने में सक्षम हैं। महादेवी ने स्वयं स्पष्ट किया है कि “नीरजा और सांध्यगीत मेरी उस मानसिक स्थिति को व्यक्त कर सकेंगे जिसमें अनायास ही मेरा हृदय सुख-दुःख में सामंजस्य का अनुभव करने लगा।”11

निष्कर्ष:-

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि कवयित्री ने अपने काव्य में अपने निजी जीवन और जगत से उपलब्ध सुख-दुःख, हास्य-रुदन, हर्ष-शोक तथा आनंद और करुणा की अभिव्यक्ति की है। कवयित्री का हृदय सुख दुखात्मक अनुभूतियों से भरा है। जब ये अनुभूतियां विचलित और उद्वेलित करने लगती हैं तो हृदय से मनोभाव कविता के रूप में फूट पड़ते हैं। महादेवी जी ने भी अपने काव्य में विरह वेदना के रूप में अपनी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति की। उनके काव्य में विरह वेदना और प्रेम की मूक पीड़ा अत्यन्त मार्मिकता के साथ व्यक्त की गई है। अपनी विरहानुभूति में कल्पना, करुणा, सात्विकता, भावोद्देरक, आषावादी दृष्टिकोण आदि समलित करते हुए महादेवी जी ने अपने काव्य को सुसज्जित किया है। उनकी विरह वेदना एक कवयित्री की वेदना है। उनका काव्य चिन्तन प्रधान है। उन्होंने अपने काव्य द्वारा चिन्तन को नई दिशा प्रदान की। संपूर्ण भारतीय साहित्य में विरह वेदना को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत करने के लिए महादेवी का स्मरण किया जाता है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि जो अभिव्यक्ति महादेवी जी ने अपने काव्य के द्वारा की है उसमें कोई अन्य कवि उनके पास तक नहीं फटकता। छायावादी युग में एक मात्र ऐसी भाव-यौवना कवयित्री है जिन्होंने नवीन विचारों को अपनी प्रखर बुद्धि की कसौटी पर कसा, खरे उतरने पर उन्हें प्राचीन भारतीय साहित्य के सांचे में ढाल कर निर्भिकतापूर्वक अपनाया। वे वैयक्तिक सुख को विश्व वेदना में घोलकर अपने जीवन को सार्थक मानती हैं तथा वैयक्तिक दुःख को विश्व सुख में घोलकर जीवन को अमरत्व प्रदान करना चाहती हैं। उनकी विरहानुभूति को देखकर उन्हें आधुनिक काव्य की मीरा कहा जाता है।

सन्दर्भ:-

1. यामा की भूमिका, महादेवी वर्मा, पृ.-3
2. छायावादी कवियों की गीत सृष्टि, डॉ. उपेन्द्र, पृण्-213

3. यामा, महादेवी वर्मा, पृ0 -63
4. दीपशिखा, महादेवी वर्मा, पृ.-113
5. यामा, संध्यागीत, पृ.-239
6. यामा, रश्मि, पृ.-75
7. यामा, महादेवी, पृ.-123
8. वही पृ.-123
9. वही पृ.-146
10. महादेवी वर्मा की काव्य अनुभूति, डॉ. रेणू दीक्षित, पृ.-66
11. यामा, महादेवी, पृष्ठ-6

Corresponding Author

Babita*

M.A. (Hindi) NET JRF, Hisar

kuldeep786soni@gmail.com